Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:11(1), November, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

''आचार्य विनोबाभावे का चिन्तन भारतीय समाजवादी मूल्यों का आधार''

हिमांशु कुमार
शोधार्थी : राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
डाकपत्थर, विकास नगर, देहरादून
(सम्बद्धता : श्रीदेव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय
बादशाहीथौल टिहरी)

ABSTRACT

"21वीं सदी की आधुनिकता पर खडा भारतीय समाज निरन्तर द्वन्द्व से गुजर रहा है, एक ऐसा द्वन्द्व जिसमें आधुनिक बनाने की कल्पना शीलता तो है, किन्तु पौराणिक रूढ़ियों की सामन्ती सोच सामाजिक परिवर्तन की धारा को रोके है। सडी–गली अनुकरणीय प्रथाओं ने न केवल पदसोपानीय विभेदों को बढ़ाया है बल्कि न्यायिता और मानवीय संवेदनाओं पर आधारित विकास के तमाम सम्भावित मार्गों को अवरूद्ध कर दिया है। अथवा उसकी गति को अतिमन्द बना दिया है। परिणामतया समाज में संसाधनों के सकेन्द्रण का विशेषाधिकार को वर्ग तैयार हुआ तो दूसरी ओर साधनविहीन (निर्धनता, भूख, बेकारी, बिमारी) वाला शोषित वर्ग आज भी अपने उद्भव की बाट जोह रहा है। ऐसे में गांधी के इस देश में सामाजिक परिवर्तन के तीनों आयामों (सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक) के विकास के लिए, उनके सच्चे सत्याग्रही विनोबा भावे के वैज्ञानिक दर्शन पर आधारित समाजवाद के भारतीय संस्करण सर्वोदय कार्यक्रम की नितान्त जरूरत है। जिसे सत्य–अहिंसा के साधनों सिंचित कर तार्किक मानवतावाद और आध्यात्मिकता की पृष्ठभूमि में भूदान एवं श्रमदान के साथ अन्तोदय किया जा सके।''

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:11(1), November, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

भारतीय ज्ञान दर्शन एवं चिन्तन के सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक पटल पर यू ंतो अनेक महान आत्माओं की उपस्थिति गौरान्वित करती है। किन्तु एक राष्ट्रीय शिक्षक, सर्वोदय के वास्तविक शिल्पाकार, श्रम के पुजारी और सच्चे अर्थों में गांधी के उत्तराधिकारी आचार्य विनोबा भावे अद्वितीय है।

हम सभी जानते हैं, कि मानव जीवन की सबसे बडी दुश्वारी निर्धनता है अर्थात गरीबी एक ऐसा अभिशाप है, जो सभी प्रकार के शोषण का कारक है। यह आदमी के आत्म सम्मान को नष्ट कर देती है। उसे बेकारी, बिमारी, और अज्ञानता के कुचक्र में जकड़ कर समाज के अन्तिम पायदान पर रहने को विवश कर देती है। वर्तमान भारतीय समाज भी उक्त सभी दानवों का शिकार है।

महाराष्ट्र के एक गांव गागोदा में 11 सितम्बर 1895 में जन्में विनोबा भावे अध्ययनशील व्यक्ति थे, उपनिषद, गीता, ब्रह्मसूत्र, भाग्य, पतांजलि, योगदर्शन और गणित का रूचि पूर्ण अध्ययन किया। किन्तु आत्मिक स्वभाव में वें मानवतावादी थे, इसीलिए छोटी उम्र में ही गांधी जी के प्रभाव में आए और सम्पूर्ण जीवन उनके दर्शन को भारत निर्माण और विश्व वन्दना हेतु समर्पित कर दिया। भारत की धर्म–भूमि में उन्होंने साम्यवाद के फलाव को रोकने के लिए उसके भारतीय संस्करण ''सर्वोदय'' वैज्ञानिक आधार प्रदान किया।[1] वें सभी अधूरे लक्ष्य जो गांधी जी अपनी मृत्यु के पीछे छोड गए थे, उन सभी रचनात्मक कार्यों जैसे खादी, ग्रामीण उद्योग, नई तालिम (बुनियादी शिक्षा), स्वच्छता और मानव कल्याण को विनोबा जी द्वारा अन्तिम सांस तक जारी रखा गया।

1921 में उन्होंने वर्द्धा आश्रम का प्रभार संभाला और सत्याग्रह के चलते वें 1923, 1932 व 1940 में जेल भी गए। तब गांधी जी द्वारा उन्हें प्रथम व्यक्तिगत सत्यग्राही कहा गया। यहीं उनके गांधीवादी उत्तराधिकारी होने के प्रमाण थे। अपने सम्पूर्ण जीवन उन्होंने इसी उत्तराधिकार से भारतीय जनमानस में अन्तोदय और सर्वोदय के लिए कार्य किया। गांधीवादी तमाम विशेषताओं के बावजूद विनोबाभावे ने जिन व्यवहारिक समस्याओं के निराकरण का प्रयास किया वें उन्हें भारतीय समाज सुधार के इतिहास में अग्रणी बना देती है। वें जानते थे कि निर्धनता मानवीय समाज की स्थापना के लिए सबसे बडा अभिशाप है। इस स्थिति को बदलने के लिए उन्होंने अपने समय के प्रचलित बैन्थम जैसे सिद्धान्तकार के 'अधिकतम व्यक्तियों के अधिकतम सुख' के उपयोगितावाद को सर्वभूत–हितय द्वारा

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:11(1), November, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

प्रतिउत्तर दिया। उनके चिन्तन में बहुसंख्यक के साथ अल्पसंख्यक वर्ग के हितों की चिन्ता परिलक्षित होती है। जो उपयोगिता की बडी कमजोरी है। भावे का सर्वोदय आत्मत्याग की भावना पर 'सबके भले में अपना भला' आधारित मूलमन्त्र को आत्मसात करता है।[2] भारतीय समाज में शोषण और गरीबी का इतिहास पुरानी रूढ़ियों में जकडा हुआ था। इस जकडन को तोडकर सामाजिक परिवर्तन की धारा या तो 'लक्ष्य की पवित्रता' के मार्क्सवादी चिन्तन से लाई जा सकती थी या साधनों की पवित्रता के गांधीवादी चिन्तन से। विनोबा जी ने हिंसा का परित्याग कर अहिंसा को, सामाजिक परिवर्तन का आधार बनाया और साम्यवाद की हिंसक क्रान्ति के स्थान पर सर्वोदय के भारतीय समाजवादी संस्करण को शान्ति, करूणा, त्याग और सत्याग्रह की बुनियाद पर केन्द्रित किया।

अपनी मूल प्रवृति में सर्वोदय एक आध्यात्मिक क्रिया कलाप है। जिसके भीतर अंह प्रकृति को जनकल्याण में बदल देने की शक्ति है। उपस्थित है, इसमें स्वतंत्रत विचारों की अभिव्यंञजना उपस्थित है, तो नैतिक उत्थान पर आधारित जनहृदय परिवर्तन, के साथ आर्थिक संसाधनों पर समान स्वामित्व की भावना का निर्देशन मौजूद है।[3] सर्वोदय की इसी भावना एवं लक्ष्य को वक्त करते हुए आचार्य भावे कहते है –

''सर्वोदय विचारधारा सबके लिए जीवकोपार्जन की व्यवस्था कर सकती है। चरखे के साथ कृषि, गोरक्षा, ग्राम उद्योग, ग्राम सफाई, नंसर्णोपचार (प्राकृतिक चिकित्सा) और नई तालीम आदि को जोडने से तो सर्वोदय कार्यक्रम सर्वोपूर्ण हो जाता है। सर्वोदयी व्यवस्था ही जीवनोपार्जन व्यवस्था है और अन्य व्यवस्था तो मरर्णोपार्जन व्यवस्था है।[4]''

विनोबा जी का समपूर्ण जीवन यद्यपि गांधीवादी मूल्यों की पूनर्स्थानपना में व्यतित हुआ किन्तु उनकी प्रतिष्ठा एवम् प्रसिद्धि की सबसे महत्वपूर्ण वजह उनका 'भूदान आन्दोलन' है। इस आन्दोलन द्वारा, भारतीय सामाजिक व्यवस्था में अन्तिम पायदान पर खडे भूमिहीन समाज को स्वावलम्बी और सशक्त बनाकर मानवीय मूल्यों को आत्मसात किया गया था।

भूदान आन्दालन –:

शब्दावली निर्माण में जिस प्रकार वन्देमातरम् बंकिमचन्द्र जी द्वारा, 'दरिन्द्रनारायण' विवेकानन्द द्वारा किया गया। ठीक उसी प्रकार 'भूदान यज्ञ' शब्द की रचना का श्रेय विनोबा जी को जाता है। यह शब्द भारत की सामाजिक व्यवस्था के आर्थिक विपन्नता की

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:11(1), November, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

समस्या के समाधान को इंगित करता है। भूमि सम्पन्न लोगों से मानवीय अपील के माध्यम से भूमिदान प्राप्त कर, भूमिहीन किसानों में वितरित कर उनके आर्थिक संकट का निदान कर इस आन्दोलन का मुख्य उद्देश्य था।

जहां तक आनदोलन की पृष्ठभूमि की बात है कि तो हैदराबाद राज्य के तेलंगाना क्षेत्र में भूमि समस्या को लेकर साम्यवादियों द्वारा हिंसक आन्दोलन चलाया जा रहा था। अनेक जमींदारों की हत्या हुई तो सरकार भी आन्दोलन के विरूद्ध दमनकारी हो गयी। हिंसक कृत्यों ने भय, हत्या, आशंका, अग्निकांड का वातावरण फैला दिया। ऐसे माहौल के समाधान हेतु नये विचार के रूप में विनोबा जी अहिंसा और सत्याग्रह पर आधारित भूदान यज्ञ का आह्वान किया, जिसने धीरे–धीरे हृदय परिवर्तन आन्दोलन का रूप ले लिया।

भूदान आन्दोलन का मुख्य उद्देश्य तत्कालीन भारत के पांच करोड भूमिहीन मजदूरों को भूमि वितरण कराना था ताकि सामाजिक–आर्थिक न्याय पर आधारित भारतीय लोकतान्त्रिक पद्धति को मजबूत बनाया जा सके। इसके लिए 5 करोड एकड भूमि को प्राप्त कर वितरण का लक्ष्य बनाया गया।[5]

इसके मूल में समाज के उस शोषित वर्ग के उत्थान का लक्ष्य निहित था जो हजारों हजार सालों से अन्तिम पायदान पर मानवीय कष्टों की पराकाष्ठा को, सामाजिक आर्थिक विषमताओं के रूप में झेल रहा था। हमारी सामाजिक व्यवस्थाओं में वह अछूत और गांधीवाद में जिसे हरिजन कहा गया, नाम परिवर्तित करने से भी अछूतों की सामाजिक हैसियत में कोई बदलाव नहीं हुआ था, इसका प्रमुख कारण उनकी गरीबी थी। प्रकृति द्वारा प्रदत्त संसाधनों पर तो बराबरी होनी चाहिए थी, किन्तु उनके हिस्से की हवा, पानी और रोटी पर प्रतिबन्धों की अन्तहीन श्रंखला लाद कर उन्हें पशुओं से भी निम्न स्तरीय बना दिया गया था।

निश्चित तौर पर विनोबा भावे की आध्यात्मिक मानवतावादी दृष्टिकोण ने समाज की उक्त समस्या का निदान भूमि की उपलब्धता के रूप में देखा और उसके लिए वैज्ञानिक समाधान के रूप में भूदान आन्दोलन की शुरूआत 1951 ई0 में 'पोचम पल्ली' ग्राम से की। भू–दान का यह आन्दोलन मार्क्स के वैज्ञानिक समाजवाद का भारतीय संस्करण कहा जा सकता है। किन्तु कई मामलों में यह उससे श्रेष्ठ दार्शनिक आधरों पर खडा हैं जहां वैज्ञानिक समाजवाद में हिसंक क्रान्ति के आधार पर आर्थिक संसाधनों को छिनकर दूसरे वर्ग के

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:11(1), November, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

कल्याण को सर्वप्रमुख बना दिया जाता है। जिससे सामाजिक सोहार्द नष्ट भ्रष्ट हो जाएगा। शोषण का प्रतिउत्तर शोषण में परिणित होगा और विभिन्न काल खण्डों में शक्ति के बल पर यह सिलसिला जारी रहेगा। ऐसे में भूदान आन्दोलन के पीछे की बुनियादी सोच यह भी थी कि अगर मनुष्य, मनुष्य के कष्टों के संवेदनशील होकर हृदय परिवर्तन के साथ अपने अधिवक्य संसाधनों में अहिंसक पूर्वक सहभागी बनाता है, तो ऐसा त्याग अथवा दान मानवीय समाज के सम्पूर्ण कल्याण को स्थाई बना देता और जीओ और जीने दो का मानवतावादी दृष्टि साकार हो जाएगा। इससे समाज पीढ़ी दर पीढ़ी अपने एच्छिक और स्वाभाविक विकास को प्राप्त करेगा। अर्थात भूदान आन्दोलन एक 'सहमति क्रान्ति' भी थी। कम शब्दों में कहे तो भू–दान आन्दोलन का मुख्य उद्देश्य शान्ति और नैतिकता के आधार पर सद्भावनापूर्ण एकता द्वारा गरीबी का विनाश करना था। अपने आरम्भिक चार वर्षों में आन्दोलन उद्देश्य प्राप्ति में सफल रहा और लगभग 40 लाख एकड से अधिक भूमि का संग्रह एवं वितरण हुआ, किन्तु बाद के वर्षों में राजनीतिक सत्ता का समर्थन न मिलने और पंचवर्षीय योजना और कल्याणकारी कार्यक्रमों के आरम्भ करने के नाम पर आन्दोलन धीरे–धीरे निष्प्रभावी हो गया।

मूल्यांकन :– विनोबा जी ने विचारों में भारतीय समाज को परिवर्तित करके नए समाज निर्माण की अपार सम्भावनाएं मौजूद है। आज के भारत में भी समस्याएं वहीं खडी नजर आती है, जिसका हल विनोबा जी भू–दान में तलाश रहे है। वर्तमान भारतीय समाज में गरीबी, अज्ञानता, बिमारी, बेकारी के पीछे के कारणों में सर्वाधिक प्रमुख भू–हीनता की स्थिति है। जिसके पास पर्याप्त भूमि है उसके लिए रोटी, कपडा और मकान की बुनियादी समस्याओं से जीवन आगे निकल गया है। किन्तु भूमिहीनता के साथ मानवीय बुनियादी जरूरतें ज्यों की त्यों बनी रहती है। आज फिर समाज को आचार्य विनोबा भावे के अधूरे कार्यों को आगे बढ़ाने की आवश्यकता हैं फिर किसी नयें सत्याग्रही की समाज को आवश्यकता है। जिस भू–दान के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए विनोबा जी द्वारा अथक प्रयास किये थे, वह परिस्थिति पुनः विकराल हो गयी है। जैसे 05 करोड गरीबों की संख्या वर्तमान परिदृश्य में 35 करोड हो गयी, अमीरों–गरीबों के बीच वर्गीय खाई बढ़ रही है, जातीय अहंकार सर्वनाश की ओर बढ़ रहा, साम्प्रदायिकता की नई इबारतें लिखी जा रही हैं, हम बहुलवाद से एकत्ववादी संस्कृति के खतरनाक परिणामों की ओर बढ़ रहे हैं, जन्म, रंग क्षेत्र व भाषाएं अवरोध बन रही है आदि। इन स्थितियों में पुनः आवश्यकता हैं, आचार्य

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:11(1), November, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

विनोबा जी के विचारों के व्यवहारिक स्वरूप के स्थापन की। भारतीय समाज में बढ़ते वैम्नस्यों को पाट्कर एकता निर्माण ही हमें सशक्त उत्थान की ओर ले जा सकता है। सम्पूर्ण भूमि गोपाल की मानकर, उसे भरण–पोषण के परमार्थी साधन मारकन समाजकल्याण के लिए उपयोग करना होगा। भूमि संग्रहण का लालन न केवल अशान्ति को जन्म देता है, अपितु हमारी बुनियादी जरूरतों की आपूर्ति में व्यवधान उत्पन्न करता है। और समाज को शोषणकारी तत्वों से भर देता है। इन सभी समस्याओं का कारगर उपाय विनोबा जी के भू–दान सम्बन्धी दर्शन के व्यवहार में निहित है।

निष्कर्ष :–

विनोबा जी का योगदान भारतीय समाज के उत्थान एवं कल्याण में अविस्मरणीय है। उनका भूदान आन्दोलन उन्हें अकेले ही विद्वानों की उस श्रेणी में ला खडा करता है। जो समाज को बदलने में सक्षम रहे। गरीबी और जातीय प्रभेदों को दूर करने के लिए नैतिक साधनों पर आधारित उनका भूदान यज्ञ वास्तव में सहमतिपूर्ण क्रान्ति बन गयी। ग्राम उत्थान एवं मानवीय कल्याण के लक्ष्य को समेटे उनका साम्ययोग सर्वोदय और अत्योदय की बुनियाद को मजबूत करता है। इसमें कतई सन्देह नही कि उनका दार्शनिक विचार आज के भारतीय समाज को व्याप्त सामाजिक–आर्थिक विषमताओं का शान्तिपूर्वक समाधान ढूंढ सकता है। वह भारतीय वर्तमान परिस्थितियों में समाजवाद की पुनः स्थापना कर, मानवीय कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। इस प्रकार उनका वैचारिक दर्शन मानवीय जीवन के प्रत्येक कालखण्ड में अपनी प्रासंगिकता को बनाए रखने में सक्षम है।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:11(1), November, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भावे, विनोबा, हरिजन, अंक 13 फरवरी 1949.
2. गांधी महात्मा, अमृत बाजार पत्रिका, अंक 16 सितम्बर 1933.
3. भावे, विनोबा, हरिजन सेवक, अंक 10 जून 1950.
4. वही
5. भण्डारी, चारूचन्द, भूदान यज्ञ, क्या और क्यों?